महामारी के बाद बच्चों के लिए हमें क्या करना चाहिए

- टेरेसा टेयर स्नाइडर
(डायने राविच (Diane Ravitch's) के ब्लॉग से)

टेरेसा टेयर स्नाइडर न्यूयॉर्क के बाहरी इलाके में वूरशिविल (Voorheesville) डिस्ट्रिक्ट की सुपरिटेंडेंट थीं। अपने फेसबुक पेज पर लिखे इस छोटे से लेख के जरिए उन्होंने हमारा ध्यान, कुछ बेहद ज़रूरी सवालों की तरफ़ खींचने की कोशिश की है। आप भी पढ़ें....

प्रिय दोस्तो और साथियो,

आज मैं इस महामारी के दौर से गुज़र रहे बच्चों के बारे में बात करना चाहती हूँ। बच्चों के बीच पूरी ज़िदगी बिताने के बाद आज मैं उन चिंताओं को आपसे साझा करना चाहती हूँ जिनसे मेरे बहुत सारे साथी और सहकर्मी जूझ रहे हैं। वे इस बात को लेकर बहुत चिंतित हैं कि जब इस महामारी के बाद बच्चे स्कूल लौटेंगे तो वे किन-किन मामलों में पिछड़ चुके होंगे। हे ईश्वर ! देश और दुनिया के अरबों लोगों की ज़िदगी तहस-नहस करती जा रही इस महामारी के दौर में ये सोचना भी कितनी बुरी बात है!

आज मैं महामारी के बाद स्कूल लौटने वाले बच्चों के हालात को लेकर अपनी एक बड़ी चिंता साझा करना चाहती हूँ। मुझे लगातार यह डर बना रहता है कि 'उनको वक्त रहते पकड़ लेने' की अपनी ज़िद में हम उनसे वो छीन लेंगे जो वे हैं, जो उन्होंने इस संकट के अनूठे समय में सीखा, समझा है। आख़िर क्या है कि हम उन्हें 'पकड़ लेना' चाहते हैं ? याद रखें, अब पहले के मॉडल नहीं चलेंगे, अब पहले की कसौटियाँ काम नहीं आएँगी, ट्रेंड एनालिसिस की सारी तदबीरें उलट-पुलट हो चुकी हैं। हमें कतई भूलना नहीं चाहिए कि ये सारी कसौटियाँ भी लोगों ने ही बनाई थीं, परमात्मा ने नहीं। ये बेमानी हो चुकी कसौटियाँ और उपाय भी पुराने ज़माने के टेलीफोन की तरह एक तरफ़ ढकेल दिए जाएँगे!

जब बच्चे स्कूल लौटेंगे तो वे एक नए इतिहास के साथ लौटेंगे। हमारा फ़र्ज़ होगा कि हम इस इतिहास को अपनाने और उसको समझने में उनकी मदद करें। जब बच्चे स्कूल लौटेंगे तो हमें उनकी एक-एक बात सुननी होगी। उन्हें अपनी कहानियों को कहने देना होगा। उन्होंने एक ऐसा साल जिया है जिसका दुनिया के आधुनिक इतिहास में कोई सानी नहीं है। हमारे पास ऐसा कोई पैमाना नहीं है जिस पर रखकर हम ये परख सकें कि वे कौन हैं या उन्होंने क्या सीखा है। याद रखें, इस पूरे साल में बच्चे दिमागी तौर पर सुस्त नहीं हुए थे , भले ही परंपरागत स्कूली दिनचर्याओं व अन्य बातों पर उनका ध्यान केंद्रित न रहा हो , मगर उनके दिमाग बखूबी

चलते रहे, पहले से भी ज़्यादा चौकस और स्थिर। मुमकिन है, वे इस बात को लेकर परेशान रहे हों कि अगले वक़्त का खाना कहाँ से और कैसे आएगा या छोटे भाई-बहनों की देखभाल कैसे करें या महामारी की बदौलत हमसे दामन छुड़ा गई दादी-माँ की याद से कैसे उबरे या अपनी चहेती चिड़िया या कुत्ते या बिल्ली को अलविदा कैसे कहे या मौत का सामना कैसे करें।

इन सारी फ़िक्रों के बीच हमारा सबसे पहला फ़र्ज़ यही है कि उनके स्कूल लौटने पर हम दिल खोल कर, बाँहें फैला कर उनका स्वागत करें और उन्हें इस इतिहास को दर्ज़ करने में मदद करें। मैं बड़ी संजीदगी से अपने साथियों-सहकर्मियों से दरख्वास्त करती हूँ कि वे बच्चों की सफलता और उपलब्धि की कृत्रिम कसौटियों को एक तरफ़ रख दें और बच्चों का उसी पायदान पर स्वागत करें, जहाँ वे खड़े हैं, ना कि उन्हें उस पायदान पर घसीटने में लग जाएँ, जहाँ उन्हें कायदे से 'होना चाहिए' था। जब वे आएँ तो पढ़ने -लिखने , चित्र बनाने और रंग भरने की ढेर सारी सामग्रियाँ दें, उन्हें नाचने-गाने का मौका और छूट दें। उन्हें वे सारे साधन और माध्यम दें, जिनसे वे अपने आपको व्यक्त कर सकें और बता सकें कि इस भयानक साल के दौरान उनके साथ क्या-क्या बीता, उन पर क्या-क्या गुजरा है। उन्हें ऐसी कहानियाँ और किताबें दें जिनकी मदद से वे रातों-रात उलट-पुलट हो गई दुनिया को समझ सकें। उन्होंने रह-रहकर आपको याद किया है। उन्हें परीक्षा की तैयारी की कमी नहीं खली, उन्हें अभ्यास पत्रक की भी कमी नहीं खली। उन्होंने पाठक समूह को गुहार नहीं लगाई। उन्हें होम वर्क की भी याद नहीं थी , पर आपकी याद उन्हें बार-बार आई थी।

बच्चों को 'दुरुस्त करने' और उनके 'बर्बाद' हो चुके समय की भरपाई करने की ज़िद पर आमादा सत्ताओं के मूर्खतापूर्ण दबावों का विरोध करें और चुनौतियों का सामना करें। कोई वक्त बर्बाद नहीं हुआ है। ये वक्त उनकी ज़िंदगी और हम सबकी ज़िंदगी के एक ऐतिहासिक दौर का सामना करने में ख़र्च हुआ है। बच्चों को दुरुस्त नहीं किया जाता, इसकी ज़रूरत नहीं होती। वे टूटे नहीं हैं। हमें उनको सुनना होगा। उन्हें वे सारे साधन और माध्यम देने होंगे जो उनके भीतर, हालात का सामना करने के लिए ज़रूरी लोच पैदा करने में मदद दें, जो उन्हें महामारी की बीती हुई दुनिया और दौर के साथ ख़ुद को एडजस्ट करने में मदद कर सकें। जो है और जो हो सकता है, उसके बीच अध्यापक-अध्यापिकाएँ एक बुनियादी कड़ी का काम करते हैं। मेहरबानी करके इन बच्चों को भरपूर मौका दें कि वे अपनी दुनिया और ज़िंदगी के बारे में हर वो बात कह सकें जो वो कहना चाहते हैं। उनको इसके लिए मदद दें कि वे उस तजुर्बे को समझ सकें जो उनकी ही नहीं, हम सबकी भयावह कल्पनाओं से भी परे था। इससे उन्हें और हमें भी बहुत कुछ ऐसा हासिल करने में मदद मिलेगी जो आज तक बनी निर्धारण, की सारी कसौटियों के दायरों से बहुत, बहुत बड़ा है।

बच्चों के साथ काम करने वाले तमाम लोगों के लिए मेरी दुआएँ !